

अमृत राय के कथा-साहित्य में जीवन-दर्शन

डॉ. अनुराधा शुक्ला

पता - हनुमान मंदिर चौक बिजुरी

वार्ड नं 10, जिला अनूपपुर (मध्य प्रदेश) मो.- 7974612940

सारांश : पिता प्रेमचन्द तथा माता शिवरानी देवी की कोख से 15 अगस्त 1921 ई. को एक ऐसे बालक ने जन्म लिया, जिसका व्यक्तित्व निराला था। माता-पिता द्वारा रखा गया नाम 'अमृत' उस बालक के व्यक्तित्व का परिचायक बन गया। उनकी वाणी से अमृत टपकता था। गिरिजा कुमार माथुर ने के व्यक्तित्व का सही निरूपण किया है - "अमृतराय एक तलदर्शी निर्मल जल-सा, खुले व्यक्तित्व का आलोक-विस्तार है। गौरा चिद्धा, अकलंक, छरहरा साफ आइने-सा शरीर वैसी ही मुक्त ठहाकेदार, हवाओं तक को गुंजाती हैसी, वैसा ही निर्व्याज व्यवहार, एक पारदर्शी मन, मर्मशील, आत्मदान भरा आश्वस्ति भाव, वक्त पर तेज-तरार प्रतिक्रियाओं का मिजाज भी, अन्तर का भरा ठहराव भी। भारत की प्राचीनतम नगरी ये प्रयागराज गंगा-जमुना जैसी विशाल पावन नदियों का संगम जैसी संस्कृति की अनेक धाराएँ यहाँ आकर मिल गई है। उसी तरह की सांस्कृतिक परम्परा और आधुनिकता, सामाजिकता और वैयक्तिकता, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी का मिलन बिन्दु है। - अमृतराय का व्यक्तित्व।" उनका प्रारम्भिक जीवन काफी संघर्षपूर्ण रहा। 15 वर्ष की आयु में ही पिता की छत्र-छाया उठ गई। समस्याओं से वीरतापूर्वक जूझते हुए उन्होंने सन् 1942 ई. में अंग्रेजी विषय से एम.ए. किया। इसी समय वे बनारस जाकर कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने। सन् 1943 ई. में 'प्रगतिशील लेखक संघ के संगठन में अपनी भागेदारी निभाकर 'प्रगतिशीलता में अपनी आस्था व्यक्त की। 29 अप्रैल, सन् 1945 ई. को विजातीय सुधा चौहान से विवाह एक प्रगतिशील और साहसी कदम था। राजनीति में हिस्सा लेने के कारण भारतीय सुरक्षा कानून के अन्तर्गत जेल-यात्रा भी की। एक किशोर पुत्र के निधन का दारुण शोक भी उन्हें सहना और झेलना पड़ा, परन्तु उन्होंने अपने जीवन-कर्म में शिथिलता न आने दी। अमृतराय ने जीवनयापन के लिए कोई नौकरी नहीं की। अपनी इच्छानुसार लेखन कार्य संपादन एवं प्रकाशन को जीविका का आधार बनाया। उन्होंने अनेक कालजयी कृतियों का सृजन किया, जिनके लिए नौकरी उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत के लेखक प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने अनेक बार विदेश यात्राएँ कीं। उन्हें जीवन पर्यन्त इस बात का दुःख रहा कि उन्हें लोग प्रेमचन्द के पुत्र के रूप में जानते हैं, एक महान पिता के एक महान लेखक-पुत्र के रूप में नहीं। 14 अगस्त, सन् 1996 ई. को वह इहलोक छोड़कर परलोक सिंघार गए।

हिन्दी साहित्य की कोई भी ऐसी विधा नहीं थी, जिस पर उन्होंने न लिखा हो। क्या उपन्यास, क्या कहानी, क्या नाटक, क्या निबन्ध, क्या यात्रा-वृत्तान्त, क्या संस्मरण, क्या समीक्षा, क्या जीवनी, क्या रिपोर्टाज, क्या रेखाचित्र कोई भी उनकी लेखनी के संपर्क से न बच सका। इतना ही नहीं, उन्होंने अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया। 'हंस' और 'नई कहानियाँ' नामक पत्रिकाओं के संपादन में वे किसी से पीछे नहीं रहे। तीन-चार कविताएँ भी लिखीं। "हिन्दी -उर्दू समस्या"; पर शोध कार्य भी किया। उन्होंने नये लेखकों को प्रोत्साहित तथा पुरस्कृत भी किया। अनेक लेखक एवं आलोचकों ने उन्हें एक विशेष विधा की परिधि में सीमित करने का प्रयास किया है, जो अनुचित है। सभी विधाओं पर उनकी पकड़ अच्छी रही है। साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान अप्रतिम है। उन्होंने समाज को निकट से देखा, समझा, जाँचा और परखा है। उनकी रचनाओं में उनकी रचनाधर्मिता स्पष्ट झलकती है। बड़े दुःख का विषय है कि

हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह स्थान न मिल सका, जिसके वे अधिकारी थे।

साहित्यकार समाज में जन्म लेता है। उसी में वह पलता एवं बढ़ता है। अतः समाज एवं तत्कालीन परिवेश का उस पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। उसका साहित्य भी समाज सापेक्ष होता है। अमृतराय साहित्यिक दायित्व के सन्दर्भ में परिवेश की व्याख्या इस प्रकार करते हैं - "हम परिवेश को ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक स्थितियों और गतिविधियों से निर्मित और पृष्ठ एक प्रकार का सम्पूर्ण वातावरण कह सकते हैं, जिसके अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति या समाज किसी समय अपने को है।" पाता है।" परिवेश के प्रभाव की महत्ता के विषय में उनका कहना है कि, "परिवेश से पूर्ण मुक्ति कैवल्य या निर्वाण की स्थिति में ही संभव है।"

अमृतराय के उपन्यास अपने समय और अपने समाज का प्रामाणिक चित्र उपस्थित करते हैं। 'बीज' से लेकर 'धुआँ तक की उनकी उपन्यास दृष्टि सामाजिक यथार्थ को दृष्टिपथ में रखकर उसमें चलने वाली सम-सामयिक चेतना को अनेक कोणों से और अनेक पहलुओं से उभारती और प्रस्तुत करती है। आलोचकों ने उनके उपन्यासों पर राजनीतिक अपवाद का आरोप लगाया है, जो अनुचित है। 'बीज' और 'हाथी के दाँत' में राजनीति ज्यादा है। 'धुआँ' में तो राजनीति का संस्पर्श है, जबकि 'नागफनी का देश', 'जंगल', 'भटियाली', 'सुख - दुख' में राजनीति तो बिलकुल नहीं है। 'सुख-दुख', 'भटियाली' और 'जंगल' उपन्यासों के सन्दर्भ में मधुरेश जी का कथन है "इन उपन्यासों में ऐसा कुछ नहीं है, जिसे गहरी मार्क्सवादी समझ के अनुशासन का परिणाम कहा जा सके।"

बीज शब्द: भटियाली, नागफनी, वैकल्य, दृष्टिपथ, छलहरा, बीज, अपवाद, आश्वस्ति।
शोध विस्तार:

अमृतराय ने एक शिक्षित एवं साहित्यिक परिवार में जन्म लिया। साहित्यिक परिवेश में ही बचपन और किशोरावस्था के अमूल्य वर्ष बिताए। स्वभावतः इनका उनके लेखकीय स्वरूप के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वस्तुतः प्रारम्भ से घर में माता-पिता को पढ़ते-लिखते पाया, साहित्यिक गोंधियाँ देखीं। इन सबने सम्मिलित रूप से उनमें साहित्य प्रेम जाग्रत किया, साहित्य के अध्ययन की रुचि उत्पन्न की और आगे चलकर लिखने की प्रेरणा दी। प्रेमचंद को सादगी अत्यधिक पसन्द थी। जहाँ तक सम्भव हो अपना कार्य स्वयं करते थे। उनके साहित्य में भी उनकी इस सादगी की स्पष्ट झलक है। साधारण जीवन और उच्च विचारों वाले पिता के सिद्धान्त को अमृतराय ने अपने जीवन में पूर्णतया अपना लिया था। एक स्थान पर उन्होंने स्वयं कहा है- "मेरी लाइफ़े स्टाइल पर एक सादगी और एक गांधीवादी असर था। मेयो होस्टल का मेरा समय गांधीवादी था, कहीं इसके पीछे भी उस आदमी (प्रेमचंद) का व्यक्तित्व होगा।"

जीवन की इस गांधीवादी सरलता, सादगी एवं उदारता की छाप अमृतराय के साहित्य के मूल में सर्वत्र ही मिलती है। प्रेमचंद सदैव ही जनता का हित चाहते थे। उनका दुःख दारिद्र्य दूर हो, वे सुशिक्षित हों, खुश रहें, यही उनकी हार्दिक कामना थी। वे यै मानते थे कि साहित्य

उसका अस्त्र बनना चाहिए। दूसरे शब्दों में वे साहित्य को सोदेश्य मानते थे। उनकी इस भावना ने अमृतराय को भी सोदेश्य साहित्य रचना की प्रेरणा दी। इस सन्दर्भ में अमृतराय का कथन है कि, “उनका साहित्य भी सोदेश्य है और मैं अपने साहित्य को सोदेश्य मानता हूँ।” यदि अमृतराय के सम्पूर्ण साहित्य पर दृष्टि डालें तो सोदेश्यता की कसौटी पर वह पूर्णतः खरा उतरेगा। समाज की कुरीतियों को देखकर उनके मन में उसे दूर करने की चेतना जाग्रत होती है। फिर वे कहीं देखकर उनके सीधे-सीधे जैसे 'बीज' में और कहीं व्यंग्य से जैसे जंगल और हाथी के दाँत में इस उद्देश्य की पूर्ति करने का प्रयास करते हैं। प्रेमचंद के समान अमृतराय भी कला के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते।

जहाँ तक विचारधारा का प्रश्न है प्रेमचंद गांधीवाद के रास्ते समाजवादी चेतना तक पहुंचे थे, क्योंकि लोक-मंगल की कसौटी पर वे हर चीज को परखते थे। वे एक समाजवादी लेखक थे। उनका साहित्य मानवतावादी साहित्य है। अमृतराय के मानवतावादी साहित्य के सृजन की प्रेरणा के मूल में प्रेमचंद का यह दर्शन प्रमुख भूमिका निभाता है। यद्यपि साहित्यिक क्षेत्र में अधिक प्रभाव ले सकने की आयु के पूर्व ही उनका देहान्त हो गया था। फिर भी 15-16 वर्ष के किशोर मन पर साहित्यिक पिता की पर्याप्त छाप पड़ चुकी थी। पिता के साथ अमृतराय की माता भी साहित्य सेविका थीं। वे सदैव ही कुछ पढ़ती रहती थीं। उन्होंने कुछ कहानियाँ तथा प्रेमचंद के जीवन पर एक पुस्तक भी लिखी है। अमृतराय के रचनाकार मानस के निर्माण में उनकी माता का भी पर्याप्त हाथ रहा।

शिवरानी देवी एवं प्रेमचंद दोनों ही स्वाधीनता आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता थे। लेख, कथा, उपन्यास, नाटक आदि लिखकर हर सम्भव उपाय द्वारा प्रेमचंद ने घर-घर में स्वाधीनता की लहर फैलाई। माता शिवरानी देवी तो कपड़े की दुकान पर धरना देती हुई पकड़ी भी गई थीं तथा कुछ महीने कारावास रह कर आई थीं। इस प्रकार अमृतराय को प्रारम्भ से घर में स्वाधीनता आन्दोलन का एक परिवेश मिला। पिता की मित्र मंडली में भी नित्य वही चर्चाएँ सुनने को मिलती रहीं। इन सबका भरपूर प्रभाव हम 'बीज' उपन्यास में देखते हैं। उनके स्वयं के अनुसार स्वाधीनता आन्दोलन के व्यापक परिवेश का उन पर भी अन्य पढ़े लिखे समझदार लोगों के समान ही प्रभाव पड़ा।

नैतिक मूल्यों की स्थापना में भी अमृतराय ने प्रेमचंद के आदर्शों से प्रभाव ग्रहण किया था। यद्यपि अमृतराय फायड से भी प्रभावित थे जिसने यौन नैतिकता को अपेक्षाकृत अधिक खुला एवं स्वाभाविक रूप दिया है यद्यपि उच्छृंखलता को न प्रेमचंद उचित मानते थे न अमृतराय इसी कारण प्रेमचंद के समान अमृतराय ने प्रेम के आत्मिक पक्ष की उसके मांसल पक्ष से अधिक चर्चा की है। उनके समग्र साहित्य का अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि अमृतराय ने न केवल प्रेमचंद के चारित्रिक गुणों एवं उच्चादर्शों से अपितु उनकी रचनाओं से भी भरपूर प्रेरणा प्राप्त की है।

पूँजीपति तथा जमींदार अधिकाधिक सम्पन्न होते जा रहे हैं। इसके ठीक विपरीत दूसरी ओर उनके सताए गए कृषक एवं श्रमिक हैं जिन्हें दो समय की रोटी भी कठिनाई से प्राप्त होती है। इन्हीं का रक्त चूसकर पूँजीपतियों तथा जमींदारों ने अपना काला धन एकत्र किया है। इन सब अत्याचारों से दगा होकर अमृतराय ने अपनी रचनाओं में उनकी दुर्दशा का वर्णन किया एवं उसे दूर करने के उपाय बताने का भी प्रयत्न किया है। वे यह चाहते हैं कि उनके साहित्य से समाज की आँखें खुल सकें, उन्हें यह विदित हो जाए कि जनता पर किस सीमा तक अत्याचार हो रहे हैं। अमृतराय के लगभग पूरे साहित्य को हम शोषण पर आधारित साहित्य कह सकते हैं। उनके स्वयं के अनुसार ये जो आर्थिक शोषण पर

आधारित समाज है। इसके भीतर से और जो शाखाएँ फूटती हैं- यह मेरे साहित्य में काफी आया है।" शोषण के साथ ही वर्ग संघर्ष की भावना ने भी इन्हें बहुत अधिक प्रेरणा दी। शोषक वर्ग का शोषित पर अत्याचार देखकर ये क्षुब्ध हो गए थे। उनके कथा साहित्य में यह बौखलाहट एवं तदज्जन्य वर्ग चेतना भी अपरिमित है।

अमृतराय की साहित्यिक प्रेरणा में नारी की दयनीय स्थिति का भी विशेष स्थान है। वे यह मानते हैं कि वर्तमान काल में नारी पूज्य कम भोग्या अधिक समझी जाती है। वह पुरुषों के हाथ की कठपुतली मात्र है। शरीर से अधिक शक्तिशाली तथा जीविका कमाने वाली होने के कारण उसने स्त्री को सदैव दासी समझा। पुरुष की शारीरिक एवं मानसिक सन्तुष्टि के लिए उसे श्रृंगार एवं सेवा से विभूषित रहना आवश्यक बताया गया उसके सन्तान की जन्मदात्री होकर भी वह वास्तविक अर्थों में उसकी सहधर्मिणी न बनकर केवल अंकशाविनी ही बनी रही नारी जागरण और नारी शिक्षा तथा अनेक आन्दोलनों द्वारा सुधारवादियों ने उसकी दशा सुधारने के प्रयत्न किए किन्तु अपवाद स्वरूप ही आदर्श स्थिति के दर्शन होते हैं। अन्यथा अधिकांश शिक्षित एवं व्यवसायी महिलाओं की स्थिति भी शोचनीय है। अनमेल विवाह, अशिक्षा, दहेज एवं पर्दा प्रथा, विधवाओं की उपेक्षित स्थिति, वेश्या प्रथा आदि कुरीतियों ने अमृतराय से धुआँ, बीज, हाथी के दाँत, जंगल, नागफनी का देश एक साँवली लड़की आदि की रचना करवाई। अछूतोद्धार, पिछड़े वर्ग के प्रति सहानुभूति अस्पृश्यता उन्मूलन आन्दोलनों से अमृतराय के साहित्यकार को उनके हितार्थ लिखने के लिए असीम प्रेरणा मिली। 'बीज' उपन्यास में उषा हरिजनों की बस्ती में जाकर रात्रि पाठशाला चलाती है। उनकी हड़ताल में सक्रिय भाग लेकर नेता बन सबसे आगे जा घायल तक हो जाती है। चमार की औलाद, जाँगर चोर आदि कहानियाँ भी इसी भावना पर आधारित हैं।

मार्क्स के द्वन्द्ववादी भौतिकवाद ने भी अमृतराय को अनेक कथावस्तुएँ प्रदान कीं। साम्यवादी आन्दोलनों, रूस की प्रदर्शनी, फिल्म आदि से 'बीज' उपन्यास भरा हुआ है। सत्य, उषा, वीरेन्द्र, प्रफुल्ल बाबू आदि ने तत्कालीन परिस्थितियों में मार्क्सवादी चिन्तन के अनुसार सक्रिय भाग लिया। उसके लिए वे जेल गए। उन्होंने सर्वहारा के दुःखों को दूर करने के लिए भी यथाशक्ति प्रयत्न किए। उनकी अन्य रचनाओं में भी इसकी पर्याप्त छाप मिलती है। अमृतराय के रचनाकाल तक फ्रायड का मनोविश्लेषण सिद्धान्त स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को स्वस्थ दृष्टिकोण दे चुका था। और क्षुधा के समान ही काम को नैसर्गिक आवश्यकता मान चुका था। अमृतराय फ्रायड को एक मनीषी मानते हैं। उसने संसार के सामने पूरी नयी दुनिया ही खोल कर रख दी। अतः अब उन सम्बन्धों के बारे में बात करने में संकोच का अनुभव नहीं किया जाता है। अपने साहित्य में आयी यौन नैतिकता के खुलेपन का श्रेय वे युग को ही देते हैं।

अमृतराय के कथा साहित्य में राजनीतिक परिवेश का भरपूर प्रभाव 'हमें दृष्टिगत होता है, 'बीज' में इसमें तत्कालीन राजनीतिक परिवेश का विस्तृत निरूपण हुआ है। इसी समय विदेशी वस्तुओं का बायकाट हुआ। दुकानों पर धरना दिया गया जिसके कारण नित्य प्रति धर पकड़ होती थी। इसका वर्णन अमृतराय की 'तिरंगे कफन' कहानी में है। इसी प्रकार सन् 1943 के बंगाल के अकाल के भीषण परिणामों का भी इन्होंने अपने साहित्य में पर्याप्त चित्रण किया है। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। देश किस प्रकार इस स्वतन्त्रता का हर्षोल्लास से स्वागत करने में मग्न था, जनता के मन में क्या-क्या आशाएँ थीं इन सब का चित्रण भी हम उनके 'बीज' उपन्यास एवं कुछ कहानियों में पाते हैं। इस स्वतंत्रता के साथ ही साथ देश का विभाजन हुआ। इसने

शरणार्थी समस्या को जन्म दिया, दोनों देशों की स्त्रियों पर अनेक पाशविक अत्याचार किए गए। देश साम्प्रदायिकता की ज्वाला में जल उठा। इन सब का चित्रण 'बीज', 'धुआँ, व्यथा का सरगम' आदि में किया गया है।

इसी प्रकार कांग्रेस शासन की अनीति दुर्व्यवहार, नेताओं का अनावश्यक शोषक रूप, अवसरवाद, घूसखोरी, इन सब ने मिलकर अमृतराय को भी समस्त बुद्धिजीवियों के समान यह सोचने पर विवश किया कि कहीं कुछ नहीं हुआ, नहीं तो आजादी की शकल ऐसी नहीं होती। इन सब परिस्थितियों का अमृतराय पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उनके मार्क्सवादी चिन्तन के अनुसार "जब तक आर्थिक शोषण से मुक्ति नहीं मिलती जनता की स्थिति में सुधार सम्भव नहीं क्योंकि अर्थ ही सबके मूल में विद्यमान है उनके प्रथम उपन्यास 'बीज' की पृष्ठभूमि यहाँ की आर्थिक समस्या है। 'नागफनी का देश उपन्यास में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की खोखली आर्थिक स्थिति का मार्मिक वर्णन है।" 'हाथी के दाँत' में पूँजीवादियों का चित्रण किया गया है। अमृतराय के नवीनतम उपन्यास 'धुआँ में स्वतंत्रता के पश्चात् की गरीबी का वर्णन है। इसी प्रकार उनकी अनेक कहानियों पर भी उस समय की आर्थिक स्थिति का प्रभाव परिलक्षित होता है।

समाजवादी धारा के अनुसार, अमृतराय अपने साहित्य द्वारा प्रगतिवादी शक्तियों को प्रतिक्रियावादी शक्तियों पर विजयी दिखलाकर समाजवादी जीवन की स्थापना करते हैं। प्रगतिवादी आन्दोलन से प्रेरित होकर अमृतराय ने अपने साहित्य में शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है। इनका साहित्य समाज एवं साहित्य को एक दूसरे का पूरक मानकर लिखा गया है। अतः कोरी कलावादिता के विरुद्ध है। मार्क्सवादी प्रभाव के कारण शोषण के हर रूप का उसमें चित्रण किया गया है। उसे दूर करने के लिए ठोस उपाय भी सुझाए गए हैं। इनके साहित्य में समष्टि हित समर्थन की भावना निहित है, साम्प्रदायिक वर्ग भेद को मिटाने के लिए वे प्रयत्नशील हैं। अपने सिद्धान्तों के समर्थन में अपने रूप बन्ध में अमृतराय ने परिवर्तन एवं प्रयोग किए हैं। इस प्रकार अमृतराय का साहित्य प्रगतिवाद की प्रेरणा से उसी की पुष्टि के निमित्त हुआ है।

अमृतराय ने साहित्यकारों के संसर्ग में अपने जीवन के प्रारम्भिक दिन व्यतीत किए हैं, उन अनुभवों की गहरी छाप उनके साहित्य में है। पिता प्रेमचंद से उन्हें मानवतावादी रचना की प्रेरणा मिली। शिक्षा समाप्त होने पर अपनी माता की इच्छा के विरुद्ध अमृतराय ने अन्तर्जातीय विवाह किया। इस विवाह ने उनकी माता को बहुत अधिक रुष्ट किया। अमृतराय माता-पिता की कनिष्ठ सन्तान होने के कारण घर में सबको विशेष प्रिय थे। किन्तु विवाहोपरान्त जब उन्हें अपने और पत्नी के प्रति माता की रोज-रोज नाराजगी और क्षोभ का सामना करना पड़ा तो वे क्षुब्ध हो उठे। उनकी कहानी 'आह्वान' तथा उपन्यास 'बीज' में इसी टीस का झलक मिलती है। मार्क्सवाद से भी वे बहुत अधिक प्रभावित थे। उनका साहित्य इसकी प्रतिध्वनि है।

इसी प्रकार जीवन की एक दुर्घटना ने उन्हें बुरी तरह प्रभावित किया था। वह है- 18 वर्ष की अल्पायु में उनके छोटे बेटे की रक्त कैंसर से होने वाली अकाल मृत्यु। सुख-दुख उपन्यास इसी दुःख से अभिभूत होकर लिखी गई करुण गाथा है। 'चित्रा फलक' भी पुत्र वियोग की कहानी है। इन दोनों में किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन न होकर, पुत्र शोक के सद्योपरान्त लिखे होने के कारण दुःख से तप्त हृदय की व्यक्तिगत गाथा है। अमृतराय ने अपने कथात्मक अनुभवों के आधार पर लिखा है "उम्र पकने के साथ जीवन के अनुभवों का कोष जो समृद्धतर होता चलता कि है, उससे जरूर समझ में गहराई आती होगी, संवेदना भी कदाचित् कुछ अधिक परिष्कृत होती होगी, जो सब अपने रहस्यमय ढंग से कहानी के

अन्दर उतर आता होगा।

संदर्भ :-

1. अमित राय कथा-साहित्य, पृष्ठ ११, डॉ. कृष्णा माहेश्वरी
2. प्रेमचंद की प्रासंगिकता, पृष्ठ १२४, अमृतराय
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २१५, डॉ. मनहर गोपाल भार्गवा
4. हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २१५, डॉ. मनहर गोपाल भार्गवा
5. विचारधारा और साहित्य, पृष्ठ ५८, अमृतराय
6. अमृत राय का कथा-साहित्य, पृष्ठ १४, डॉ. कृष्णा माहेश्वरी
7. अमित राय का कथा-साहित्य, पृष्ठ १५, डॉ. कृष्णा माहेश्वरी
8. सरगम, पृष्ठ १५८, अमृतराय
9. अमृतराय का कथा-साहित्य, पृष्ठ १८, डॉ. कृष्णा माहेश्वरी
10. माया - सितंबर १९७६, पृष्ठ ९१।
11. माया - सितंबर १९७६, पृष्ठ ९१।